Sumangalam Prabha
A peer reviewed (Refereed) & open access journal
RNI N0.- UPHIN/2009/31180
PP.No.: 20-21

ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

महाकुंभ की महामाया

डॉ0 शिवकुमार सिंह 'कौशिकेय'
इतिहासकार, बलिया (उ0प्र0)

प्रयागराज मे आयोजित महाकुंभ–2025 ने समस्त वैश्विक जीवन पर प्रभाव डाल दिए हैं , मानव सभ्यता के इस सबसे बड़े जन समागम के अनेकानेक आयाम हैं, यह जानने के लिये इसके अतीत से अन्वेषण आरंभ करते हैं, मैं प्रयागराज में आयोजित 1989 , 2001, 2007, 2013 और 2019 का प्रत्यक्ष साक्षी रहा हूँ, जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण मैने इसके विविध बिन्दुओं पर अध्ययन भी किए हैं, श्रीशुभ संवत 2081 विक्रमी पौष पूर्णिमा एवं माघ कृष्ण एकम् के संक्रमण मकरसंक्रांति तदनुसार 13–14 जनवरी 2025 ईस्वी से फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी महाशिवरात्रि तदनुसार 26 फरवरी 2025 तक तीर्थराज प्रयागराज मे महाकुंभ–2025 का आयोजन सम्पन्न हुआ है।

गिनीज बुक्स ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड मे अंकित पृथ्वी के सबसे वृहद आध्यात्मिक, यौगिक, पौराणिक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक , सामाजिक और आर्थिक आयामों से जुड़े महाकुंभ की उत्पत्ति वैदिक सनातन धर्म के ज्योतिष शास्त्र अनुसंधान के अनुसार जिस समय इस निखिल ब्रह्माण्ड की पृथ्वी से दृश्य आकाशगंगा मे विद्यमान सूर्य और चन्द्रमा ग्रह वृश्चिक राशि मे और बृहस्पति ग्रह मेष राशि मे प्रवेश करते हैं तब प्रयागराज मे महाकुंभ आयोजित होता है, यह दिन मकर संक्रांति पर्व का दिन होता है, पौराणिक लोकोक्ति कथानक के अनुसार पृथ्वी पर निवास करने वाली सुर–असुर जाति के मानवों ने मिलकर सागर मंथन किए थे । इस समुद्र मंथन से कुल चौदह रत्न निकले चौदहवां रत्न अमृत था। इस अमृत को लेकर असुर भागने लगे जिनका पीछा देवताओं ने किए इनकी छीना– झपटी अमृत की कुछ बूंदें पृथ्वी के चार स्थानों प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक मे गिर गई थीं। इसी घटना को लेकर प्रत्येक छः वर्ष पर अर्धकुंभ और 12 वर्ष के अंतराल पर महाकुंभ के आयोजन आरंभ हुये थे। अर्थात इन चारों पवित्र तीर्थ स्थलों पर क्रमशः अर्धकुंभ और महाकुंभ आयोजित किए जाते हैं , इनकी गणना उपरोक्त ग्रहों और राशि प्रवेश पर आधारित हैं, प्रायः चारों स्थान पर प्रत्येक छः वर्ष पर उनकी गणना के अनुसार अर्धकुंभ और बारह वर्ष पर महाकुंभ होते हैं। इस वर्ष 2025 मे प्रयागराज मे महाकुंभ आयोजित हुआ, जिसमें 66 करोड़ 30 लाख लोगों ने प्रयागराज के पवित्र संगम मे स्नान किए।

इसके पहले 2019 ई. मे यहाँ अर्धकुंभ लगा था। 2013 मे यहाँ लगे महाकुंभ मे 8 करोड़ नर–नारियों ने पतित पावनी भगवती गंगा–यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियों के त्रिवेणी संगम मे अवगाहन किए थे। वर्ष 2006 और 2001 मे भी यहाँ अर्धकुंभ लगा था। 1989 ईस्वी मे प्रयागराज मे आयोजित महाकुंभ के समय गिनीज बुक्स ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड की टीम ने इसे विश्व के एक स्थान पर एकत्रित सबसे बड़े जन समागम के रुप मे पंजीकृत किया था।

पृथ्वी के सबसे बड़े जन समागम महाकुंभ के आरंभ का अभिलेखीय साक्ष्य बौद्ध धम्म की पुस्तकों मे 600 ईसापूर्व का मिलता है, यद्यपि कि इनमें यह भी लिखा है कि यह महाकुंभ बहुत पहले से लगता आ रहा है, इतिहासकार एस.पी.राय ने कुंभ का आरंभ दस हज़ार ईसापूर्व माना है अर्थात यह परम्परा बारह हज़ार चौबीस वर्ष प्राचीन है, इसकी महत्ता इस बात से भी समझी जा सकती है कि वर्तमान कालखण्ड मे मनुष्यों के द्वारा आत्मिक उत्थान के लिये अपनाए जाने वाले पंथ–मज़हबों मे अनुयायियों की संख्या आधार पर विश्व भर मे पहले स्थान पर प्रभु ईसा मसीह का ईसाई धर्म केवल 2024 वर्ष का हुआ। दूसरे स्थान पर इस्लाम धर्म है जिसकी उम्र मात्र 1446 साल हुई है , तीसरे स्थान पर बौद्ध धम्म है जो 2563 वर्ष प्राचीन है, हमारे व्यक्तिगत दृष्टिकोण से इस वैश्विक जन समागम महाकुंभ को किसी भी मत–पंथ–मजहब के कोटर मे कैद कर देखना कदाचित अनुचित होगा। क्योंकि इस तरह का बिना किसी निमंत्रण पत्र बुलावे के दुर्गम हिमालय पर्वत की गुफा कन्दराओं से लेकर वन–जंगलों , नगरों , गाँव–देहात करोड़ों लोगों का यहाँ के कल्पवास, साधना, संगम दर्शन–स्पर्श, स्नान और सभी मत–पंथों के बारे मे जानने–समझने के लिये उनके खालसा–प्रवचन पंडालों मे आयोजित होने वाले धार्मिक, लोकरंजक कार्यक्रमों और इसकी परम्परा विश्वविद्यालयों द्वारा अनुसंधान किया जाना चाहिए।

इन महाकुंभों में संत–महात्मा, योगी–यति–संन्यासी समुदाय अपने विराट–विशाल समूह के साथ पधारते हैं, जिन्हें अखाड़ों की पेशवाई कहा जाता था। तथा पर्व स्नान को शाही स्नान कहा जाता था।

उत्तरप्रदेश के मा. मुख्यमंत्री और योगी आदित्यनाथ जी के आग्रह पर संत अखाड़ों ने पेशवाई को नगरप्रवेश तथा शाही स्नान को अमृत स्नान नाम दिए हैं।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

महाकुंभ के शासकीय अभिलेखों मे सर्वप्रथम अभान अखाड़े के पंजीकरण प्रमाणपत्र मिलते हैं 547 ईस्वी मे यह पंजीकृत हुआ था। सन् 904 ईस्वी मे निरंजनी अखाड़ा , सन् 1146 ई. मे जूना अखाड़ा, सन् 1300 ई. मे कनफट्टा योगी अखाड़ा, सन् 1565 ई. मे मधुसूदन सरस्वती दसनामी अखाड़ा, सन् 1678 ई. मे प्रणामी अखाड़ा पंजीकृत हुआ था।

विश्व के इस सबसे वृहद, विचित्र ऋषि–मुनि, योगी–यति, साधु–संतों, धनी–निर्धन, ज्ञानी–अज्ञानी, शिक्षित –अशिक्षित, गोरे–काले, अंतरिक्ष वैज्ञानिक से लेकर गाँव–देहात के गंवार तक के नर–नारियों का एक निर्धारित समय सीमा के भीतर एक नगर मे एक ही लक्ष्य–उद्देश्य से एकत्रित होना अपने आप मे एक अद्भुत अलौकिक घटनाक्रम है, जिसके बारे मे विदेशी समाचार पत्रों और इलेक्ट्रानिक मीडिया ने भी लिखा; बीबीसी ने लिखा–महाकुंभ मानवता का सबसे बड़ा समागम था।

एक्सप्रेस ट्रिब्यून ने लिखा– यह विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक समारोह था। द न्यूयार्क टाइम्स ने लिखा– इस आयोजन मे केवल श्रद्धालु और पर्यटक ही नही बल्कि नेता और विभिन्न क्षेत्र की हस्तियां भी पहुँची। रॉयटर्स ने लिखा– यह डिजिटल कुम्भ था । इसमें व्यवस्था बनाने के लिए तकनीक का बेहतर प्रयोग किए गए। सी एन एन ने लिखा – आयोजन मे भभूति लपेटे नागा साधुओं ने स्नान किया। उनके क्रिया कलाप आकर्षण का केन्द्र रहे। द गार्डियन ने लिखा– यह पर्वों का पर्व था। लोगों का उत्साह चरम पर रहा। अमेरिकन अखबार द वॉल स्ट्रीट जर्नल ने लिखा– यह एक ऐसा आयोजन था, जहाँ अमेरिका की कुल आबादी से अधिक लोग जुटे।

हजारों वर्ष की इस महाकुंभ की परम्परा मे अनेक अच्छी–बुरी घटनाएँ घटित होती रही हैं, इसके प्रबंधन की चिन्ता यहाँ आने वाले लोग कभी नही करते हैं, मैंने स्वयं महाकुंभ मे मानव मल–मूत्र युक्त रेत पर चल कर स्नान किए थे। लेकिन इस वर्ष इस महाकुंभ का सम्पूर्ण कलेवर ही बदल गए थे। विश्व के अधिकांश देशों की सम्पूर्ण जनसंख्या से भी अधिक लोगों का 45 दिनों मे मात्र चार हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल मे एकत्रित होने के बाद भी ऐसी स्वच्छता की व्यवस्था एक अनुकरणीय और अनुसंधान का भी विषय है। यह सब संभव इसलिए भी हुआ कि भारत सरकार के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और उत्तरप्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री श्री आदित्यनाथ योगी ने इसे सेवा के महान अवसर के साथ–साथ अर्थव्यवस्था सुधारने का भी अवसर मानकर अपनी सम्पूर्ण योग्यता, क्षमता, संसाधनों का उपयोग करते हुए पूरी निष्ठा श्रद्धा के साथ पुरुषार्थ किए महाकुंभ ने 3रू50 ट्रिलियन रुपए का योगदान अर्थव्यवस्था मे किए हैं । उत्तरप्रदेश की जीडीपी भी वर्ष– 2024–25 मे 27रू51 तक पहुँच सकती है। इस महाकुंभ से भारत की जीडीपी मे 1प्रतिशत का उछाल आ सकता है और उत्तरप्रदेश की जीडीपी मे 11.6 प्रतिशत बढ़ोत्तरी के आसार दिखाई दे रहे हैं। प्रयागराज जिले की जीडीपी 68727/11करोड़ रुपए प्राप्त कर प्रदेश मे छठवें स्थान पर पहुँच गई है, इस महाकुंभ ने दस लाख से अधिक स्थायी/अस्थाई रोजगार का भी सृजन किया है, प्रयागराज के अतिरिक्त इसके समीपवर्ती जिलों वाराणसी, मिर्जापुर, कौशांबी से लेकर अयोध्या, चित्रकूट तक अमृत कुंभ से धन की वर्षा हुयी है, उत्तरप्रदेश परिवहन निगम, भारतीय रेलवे ने भी अपने आर्थिक विकास का अमृत पान किए हैं। यह तो केवल एक बानगी भर है, महाकुंभ के दौरान लगे भीषण जाम के कारण भी स्थानीय ग्रामीण इलाके के लोगों पुण्य के साथ अपने गाँव की वस्तुओं को दिखाने और बेचने के अवसर प्राप्त हुये थे ।

इस महाकुंभ ने भी तीन वैश्विक कीर्तिमान स्थापित किए एक साथ उन्नीस हजार स्वच्छता कर्मियों ने दस किलोमीटर की सफाई का कीर्तिमान बनाए। एक साथ 329 स्वच्छता कर्मियों ने संगम तट और घाट सफाई का कीर्तिमान स्थापित किए। तीसरा कीर्तिमान दस हजार एक सौ दो चित्रकारों के द्वारा सबसे लम्बी हस्त चित्रकला के लिए प्राप्त हुआ।

*****